एस. एस. सरकार का प्रजाति वर्गीकरण

1. **आस्ट्रेलायड (Australoid)-**

इस प्रजाति को विद्वानों ने भिन्न नामों से प्रस्तुत किया है जैसे- प्रोटो-आस्ट्रेलायड, प्री-द्रविड एवं वेडिद आदि। सरकार का यह विश्वास हैं कि आस्ट्रेलायड ही वह प्रजातीय तत्व हैं जो कि भारतीय जनसमूह में आदिकाल से विद्यमान रहा हैं और किसी समय इस समूह के लोग भारत में दूर-दूर तक वितरित रहे होंगे। दक्षिणी भारत के कुछ समूह जैसे उराली, पनियन, कदार आदि में आस्ट्रेलायड प्रजाति का मूलभूत स्वरूप सुरक्षित है। ऐसा प्रतीत होता हैं कि भारत कि सभी जातियों में आस्ट्रेलायड तत्व विद्यमान हैं किन्तु इसका संकेन्द्रण निम्न जातियों में अत्यधिक है। आस्ट्रेलायड प्रजाति के लोगों कि यह विशिष्टता हैं कि इनका कद छोटा, रंग गहरा, सिर डोलीसिफेलिक और नासिका चौड़ी होती है, तथा इनके बाल लहरदार होते है।

2. **इंडो- आर्यन (Indo-Aryan) –**

आस्ट्रेलायड प्रजाति कि तुलना में इंडो-आर्यन प्रजाति के लोगों का कद लंबा, त्वचा एवं नेत्रा वर्ण हल्का होता है। इनके सिर के बाल भी अपेक्षाकृत हल्के रंग के होते है। इनका सिर लंबा, भारी एवं अधिक कपाल क्षमता वाला होता है। शारीरिक गठन भी अत्याधिक शक्तिशाली होता है। हिंदुकुश पर्वतों में निवास करने वाले बाल्टीज इसके सर्वोत्तम उदाहरण है। इसके अलावा इंडो-आर्यन प्रजाति लक्षण वाले लोग पश्चिमी भारत कि सिंधु एवं गंगा घाटी में अधिकतर पाये जाते है। वैसे इनका प्रसार पश्चिमी बिहार तक देखा जाता हैं। पूर्वी बिहार तथा बंगाल और आसाम में इनका वितरण छुट-पूत हैं।

3. **ईरानी-साइथियन (irano-scythian)-**

यह विश्वास किया जाता हैं कि ये लोग उत्तर-पश्चिमी सीमा से भारत में प्रविष्ट हुये। इंडो-आर्यन कि तुलना में इनका कद माध्यम और सिर मिजोसीफेलिक होता है। आज इस प्रजाति के लोग पूर्वी बिहार, बंगाल और आसाम में पाये जाते हैं। चुकी ये लोग भारत में प्रवेश बाद सिंधु घाटी पार करते हुये दक्षिण कि ओर गए और अंतत: गुजरात, बुम्बई एवं महाराष्ट्र और फिर मैसूर तथा डिंक्कन आदि क्षेत्रों में पहुंचे, अत: आज भी इन क्षेत्रों के जनसमूहों में इरानों-साइथियन प्रकार के शारीरिक लक्षण पाये जाते हैं।

4. **मुंडारी भाषा-भाषी(mundaari speaking people)-**

इस प्रजाति के लोग तंदरुष्ट और शक्तिशाली शारीरिक गठन वाले होते है। इंका कद छोटा सिर लंबा होता है, त्वचा वर्ण आस्ट्रेलायड कि अपेक्षा हल्का होता है। इनके बाल मंगोलों कि तरह सीधे और गहरे रंग के होते है, ये लोग नदी कि घाटियों और भारत के पूर्वीय केंद्रीय पठारों जैसे छोटा नागपूर और मध्य भारत स्थित उड़ीसा के पर्वतीय अंचलों तक सीमित है। ऐसा प्रतीत होता हैं कि मंगोलायड लोगों से उनकी घनिष्ठ संबंध्द्ता रही है।

5. **सुदूर पूर्वी (Far Eastern)–**

यह विश्वास किया जाता हैं कि भारत का दक्षिणी-पूर्वी एशिया से प्राचीन संबंध रहा है जो समभावता ऐतिहासिक कल तक निरंतर बना रहा। इसी कारण कुछ पूर्व तटवर्ती जनसमूह विशेषकर ट्यूटीकोरियन (तित्रविली के समुद्री तट एवं चितगांग के पर्वतीय क्षेत्रों) अपने शारीरिक लक्षणों में मैलियन-पॉलीनेशियन प्रजातीय तत्व प्रदर्शित करते हैं। सरकार ने यह स्पष्ट किया है कि मैलियन प्रजाति तत्व अन्य प्रजातीय तत्वों से भिन्न है क्योंकि उसमें गहरा त्वचा वर्ण, चौड़ा अथवा अत्याधिक चौड़ा सिर, छोटा कद एवं स्थूल शरीर कि प्रविति पायी जाती है।

6. **मंगोलियन (Mongolian's)-**

ये लोग भारत के उत्तरी-पूर्वी सीमा क्षेत्र एवं हिमालय कि निम्न पहाड़ियों पर निवास करते है। इनका त्वचा वर्ण पीतमय होता है। मुखमंडल तथा शरीर पर बहुत कम बाल पाये जाते है। मंगोलियन फ़ोल्ड एवं अन्य मंगोलयड लक्षण भी पाये जाते है।

सरकार ने मोहन-जोदड़ों तथा हड़प्पा से प्रपट अस्थीय कंकालों का अध्ययन कर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया, मृतकों को दफनाने कि विधियों एवं अस्थीय सामग्री के विश्लेषण के आधार पर उन्होंने सिंधु-घाटी के लोगों एवं ईरान के टेप हिसार लोगों कि कपालीय समानताओं का उल्लेख किया है। इसी आधार पर वे यह विश्वास करते हैं कि सिंधु घाटी के डॉलीकोसिफेलिक लक्षण वाले (क्रेनियल-इंडैक्स = 71) लोग टेप हिसार के निवासियों के विस्तार मात्र है। इनका यह भी विश्वास है कि सिंधु घाटी के सभ्यता के लोग आधारित रूप से आस्ट्रेलायड प्रजातीय तत्व वाले थे। इसी प्रकार ब्रम्हागिरि से प्राप्त अस्थीय सामग्री के आधार सरकार ने आस्ट्रेलायड एवं इरानों- साइथियन नामक दो प्रजाति स्वरूपों को विभेदित किया। पश्चिमी